1. करो या मरो — **महात्मा गांधी**
2. तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा — **सुभाष चन्द्र बोस**
3. आराम हराम है — **जवाहर लाल नेहरू**
4. स्वतन्त्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है — **बाल गंगाधर तिलक**
5. इन्कलाब जिन्दाबाद — **इकबाल**
6. सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा — **इकबाल**
7. विजयी विश्व तिरंगा प्यारा — **श्याम लाल गुप्ता**
8. वन्दे मातरम् — **बंकिम चन्द्र चटर्जी**
9. जय जवान जय किसान — **लाल बहादुर शास्त्री**
10. उठो, जागो और बगैर रुके लक्ष्य तक पहुंचो — **स्वामी विवेकानन्द**
11. जय हिन्द — **सुभाष चन्द्र बोस**
12. मन चंगा तो कठौती में गंगा — **संत रैदास**
13. व्यवहार एक दर्पण है जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व दिखाई देता है। — **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**
14. मेरे पैर उधर कर दे, जिधर तेरा काबा न हो — **गुरु नानक**
15. सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है — **रामप्रसाद बिस्मिल**
16. वेदों की ओर लौटो — **स्वामी दयानन्द**
17. कृण्वन्तो विश्वमार्यम् — **स्वामी दयानन्द**

18. अश्वत्थामा हतो–नरो वा कुंजरो वा **युधिष्ठिर**

19. एक सुई की नोक बराबर पृथ्वी भी नहीं दूंगा **दुर्योधन**

20. खूब लड़ी मरदानी वह तो झांसी वाली रानी थी **सुभद्रा कुमारी चौहान**

21. नारी तुम केवल श्रद्धा हो **जयशंकर प्रसाद**

22. नारी जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी। **मैथिलीशरण गुप्त**

23. चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूंधा जाऊं। **माखन लाल चतुर्वेदी**

24. नर सेवा–नारायण सेवा। **स्वामी विवेकानन्द**

25. ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। **स्वामी दयानन्द**

26. मुक्ति दिलाने आया हूं, मृत्यु नहीं। **स्वामी दयानन्द**

27. मुझे अगर 100 निष्ठावान कार्यकर्त्ता मिल जाएं तो मैं भारत की काया पलट कर सकता हूं। **स्वामी विवेकानन्द**

28. हे राम **महात्मा गांधी**

29. जन गण मन अधिनायक जय हे **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

30. Who lives if India dies **जवाहर लाल नेहरू**

31. अंग्रेजों भारत छोड़ो **महात्मा गांधी**

32. सवा लाख से एक लड़ाऊं **गुरु गोविन्द सिंह**

33. अपना राज्य बुरा होने पर भी, विदेशी राज्य से सौ गुना अच्छा है **स्वामी दयानन्द**

34. तृष्णा ही सब दुखों का मूल है। **महात्मा बुद्ध**

35. मेरी अहिंसा कायरता नहीं सिखाती **महात्मा गांधी**

36. मेरे सिर पर लाठी का एक–एक प्रहार अंग्रेजी शासन के ताबूत की कील बन कर रहेगा। **लाला लाजपत राय**

37. अभ्यास से विद्या धारण की जाती है, कुल को शील से धारण किया जाता है, गुणों से मित्र धारण किए जाते हैं तथा नेत्रों से क्रोध धारण किया जाता है। **चाणक्य नीति**

38. जहां स्त्रियाँ पूजित होती हैं, वहीं देवताओं का वास होता है। **मनुस्मृति**

39. जिस वृक्ष की छाया में बैठें अथवा लेटें, उसकी शाखा तक न तोड़ें। मित्र द्रोह पाप है। **जातक**

40. जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया है, वे मुक्ति के द्वार पर हैं, बाकी सब मोह जाल में फंसे हैं। **तिरुवल्लुवर**

41. भय की भांति, साहस भी संक्रामक होता है। **प्रेमचन्द**

42. भले बुरे की परवाह करने वाला, प्रेम नहीं कर सकता। **ओशो**

43. सूर्य, चन्द्रमा तथा सत्य लम्बे समय तक ओट में नहीं रह सकते। **बुद्ध**

44. मूर्ख आदमी कुछ भी कह दे, विद्वान पुरुष को सब कुछ सहन कर लेना चाहिए। **वेद व्यास**

45. जो जिस चीज की इच्छा करता है, वह उसे अवश्य पा लेता है, बशर्ते वह बीच में ही प्रयास न छोड़ दे। **योग वशिष्ठ**

46. जो शांत भाव से सहन करता है, वह गंभीर रूप से आहत भी होता है। **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

47. मानवता दूसरे के दोषों को छिपाती है, तुच्छता दूसरे के दोषों को निकालती है। **तिरुवल्लुवर**

48. कौन ऐसा प्राणी है जो अपनों का विरह सह सकता है। **बाणभट्ट**

49. यदि आपका हृदय ईमान से भरा है, तो एक शत्रु क्या सारा संसार आपके सम्मुख हथियार डाल देगा। **रामतीर्थ**

50. स्वधर्म के प्रति प्रेम, पर धर्म के प्रति आदर तथा अधर्म के प्रति उपेक्षा ही असली धर्म है। **विनोबा**

51. अतीत को दफना दो, अनन्त भविष्य तुम्हारे सामने है। **विवेकानन्द**

52. एक तपे हुए लोहे को, दूसरे तपे हुए लोहे से जोड़ देना ही ठीक है। **कालीदास**

53. बार–बार यत्न करने से, असम्भव भी संभव हो जाता है। शत्रु मित्र हो जाता है और विष अमृत बन जाता है। **योग वशिष्ठ**

54. महान कार्य करने के लिए शत्रु से भी संधि कर लेनी चाहिए। **भागवत**

55. दया करना सबसे बड़ा धर्म है। **बाल्मीकि**

56. नास्तिक वह है, जिसे अपने पर विश्वास नहीं है। **विवेकानन्द**

57. हम अगर चलते हुए गिरते हैं, तो हमें परेशान नहीं होना चाहिए। इससे हममें और बेहतर ढंग से चलने का कौशल विकसित होता है। **अरविंद**

58. हम जितनी जल्दी लोगों की भावनाओं का अनुमान लगा सकें, दुनिया के लिए उतना ही अच्छा होगा। **डॉ. राधाकृष्णन**

59. जो व्यक्ति अपनी निंदा करने की क्षमता रखता है, उससे बड़ा जितेन्द्रिय कोई नहीं। **महर्षि वेदव्यास**

60. श्रेष्ठ की संगति किसका बल नहीं बढ़ाती ? **कालीदास**

61. प्रशंसा सफलता की नहीं, सज्जनता की होनी चाहिए। **श्री राम आचार्य**

62. जो अत्यधिक सौम्य हैं, जो पगपग पर शंकित रहते हैं, जो दूसरों की निन्दा से डरते हैं, ऐसे लोग कभी समृद्ध नहीं होते। **चाणक्य नीति**

63. मनुष्य अपने ही दोषों के कारण शंकित होता है। **भास**

64. यदि तुम सूर्य के खोने पर, आंसू बहाओगे तो तुम तारों को भी खो बैठोगे। **रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

65. राजा जैसा आचरण करता है, प्रजा भी वैसा ही आचरण करने लगती है। **बाल्मीकि**

66. लोग एक दूसरे को शिक्षा देते हैं, किन्तु स्वयं उसका पालन नहीं करते। **तुलसीदास**

67. मनुष्य को जो प्राप्ति होनी है, वह होगी, भाग्य भी बाधा नहीं डाल सकता। **पंचतन्त्र**

68. तुम हमेशा कह सकते हो कि प्रतिमा ईश्वर है, केवल यही सोचने से बचना कि ईश्वर प्रतिमा है। **स्वामी विवेकानन्द**

69. सोने की शुद्धता या मिलावट, अग्नि में ही परखी जा सकती है। **कालीदास**

70. रिवाज के कुएं में तैरना अच्छा है, डूबना आत्महत्या। **महात्मा गांधी**

71. जो न हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, वह भक्त परमात्मा को सबसे अधिक प्रिय होता है। **वेदव्यास**

72. धर्म दक्षता में, यश दान में, स्वर्ग सत्य में और सुख शील में रहता है।

वेदव्यास

73. संसार में सभी प्राणी समान है, और सभी को जीवित रहने का अधिकार है, इसलिए किसी को किसी के प्रति अन्याय या किसी का शोषण नहीं करना चाहिए।

महावीर

74. वैराग्य साधना से जो मुक्ति मिलती है, वह मेरे लिए नहीं है, मैं तो असंख्य बन्धनों के बीच आनन्दमयी मुक्ति का आनन्द लेना चाहता हूँ। **रवीन्द्र नाथ ठाकुर**

75. संसार में अधिकांश सत्य केवल सामयिक सत्य होते हैं। चिरकाल के लिए अगर सत्य हो तो वह संसार से बाहर की चीज है। **शरदचन्द्र**

76. बुद्धिमान पुरुष वही है जो प्रत्येक कार्य को अपने लिए रुचिकर बना ले।

स्वामी विवेकानन्द

77. आंखें खुली हों तो पूरा जीवन ही विद्यालय है। जिसे सीखने की भूख है वह प्रत्येक व्यक्ति व घटना से सीख लेता है। **ओशो**

78. सरल व्यक्ति का सभी तिरस्कार करते हैं। **बाल्मीकि**

79. जिसने कभी प्रेम नहीं किया, वह भगवान की कृपा कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

रामानुजाचार्य

80. हर व्यक्ति में दिव्यता का अंश होता है, शिक्षा का काम उसे ही खोज निकालना होता है। **महर्षि अरविंद**

81. जो जैसे व्यक्ति की संगति करता है, वह वैसा ही हो जाता है। **जातक**